इस आलीशान मकान का .....

इस आलीशान मकान का क्या देते हो आप किराया
पांच तत्त्व का महल बनाया, कारीगर ने खूब सजाया
कल पुरजे वह बहुत लगाया, सुन्दर रूप बनाया ।
क्या देते हो आप.....

इसी महल में दस दरवाजे, ऊपर कलश कंगूरा साजे
अनहद नौपत निसदिन बाजे, सुन्दर राग सुनाया
क्या देते हो आप.....

प्राण अपान का पंखा हिलता, ज्ञान का दीपक निसदिन जलता
पांच तत्व की लगे कचैरी, पल–पल न्याय कराया
क्या देते हो आप.....

मकान मालिक को नहीं जाना, मूर्ख मन में हुआ रे दीवाना
व्यर्थ हुआ रे तेरा जग में आना, धिक्क है तेरी काया
क्या देते हो आप.....

अलख राम सतगुरू की दाया, पूरण ब्रह्म हमें दरसाया,
जीव भ्रम का भेद मिटाया, आप में आप समाया
क्या देते हो आप.....

धरती फाटे मेघ मिले, कपड़ा फाटे डोर।
तन फाटे का औषधि, मन फाटे नहिं ठोर।।